विषय- संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
किरातार्जुनीयम् - प्रथमसर्ग, महाराजा कॉलेज, आरा
पद्यांश व्याख्या दिनांक - 18/09/2020

न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः
कृतं न वा कोपविजिह्ममाननम् ।
गुणानुरागेण शिरोधिरुह्यते
नराधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम् ॥2॥

अन्वयः- तेन क्वचित् सज्यं धनुः न उद्यतम्। आननं वा कोपविजिह्मं न कृतम्। नराधिपैः अस्य शासनं गुणानुरागेण माल्यम् इव

"Failure comes only when we forget our ideals and objectives and principles." – Jawaharlal Nehru

Scanned with CamScanner

Date ___/___/_______ Page No.: _______

शिरोभिः उह्यते ।

भावार्थ- इस पद्य में दुर्योधन के प्रति अन्य अधीन राजाओं की आज्ञाकारिता का वर्णन किया गया है। उसे कभी धनुष उठाने या क्रोध करने की जरूरत नहीं पड़ती, प्रत्युत राजागण उसके गुणों से प्रभावित होकर अनुराग एवं नम्रता से उसकी आज्ञा शिरोधार्य करते हैं।

भाषार्थ- (तेन क्वचित् सज्यं धनुः न उद्यतम्) उसने कभी डोरी चढ़ाकर धनुष को नहीं उठाया और न ही कभी क्रोध से मुख ही कुटिल किया। ~~(फिर भी) अधीनस्थ राजा~~ (आननं वा कोपविजिह्मं न कृतम्) (नराधिपैः अस्य शासनम् फिर भी अधीनस्थ राजा लोग इसके आदेश को ~~इसके गुणों~~ (गुणानुरागेण माल्यम् इव शिरोभिः उह्यते) इसके गुणों में प्रेम होने से माला की तरह शिर पर धारण करते हैं अर्थात् शिरोधार्य करते हैं।

पदव्याख्या- तेन क्वचित् सज्यं धनुः न उद्यतम्= उसके द्वारा कहीं धनुष की डोरी चढ़ाकर नहीं उठाया गया, अर्थात् उसे कहीं विरोधियों का दमन करने केलिए शस्त्र धारण की आवश्यकता नहीं है। सज्यम्=ज्यया सहेति सज्यम्। ज्या=डोरी, 'वोपसर्जनस्य' से 'सह' के स्थान पर 'स' हो गया। 'मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुणः' इत्यमरः। उद्यतम् = उठाया गया, उद्+यम+क्त (कर्मणि)। आननं वा कोपविजिह्मं न कृतम्= मुख भी कभी क्रोध से कुटिल नहीं किया गया, आननम्=मुखम्। कोपविजिह्मम्= क्रोध से कुटिल। विशेषेण जिह्मं विजिह्मम्

"The butterfly counts not months but moments, and has time enough." —Rabindranath Tagor

Scanned with CamScanner

Date ___/___/______ Page No.: ______

(प्रादितत्पु०) कोपेन विजिह्मं कोपविजिह्मम् (तृ० तत्पु०), कुप् + घञ् = कोपः। कृ + क्त = कृतम्।
गुणानुरागेण = गुणों के अनुराग से। गुणेषु अनुरागः गुणानुरागः, तेन, 'हेतौ तृतीया' हेतु अर्थ में तृतीया। शिरोभिः उह्यते = सिरों से ढोया जाता है, शिरोधार्य किया जाता है, पालन किया जाता है। वह् + लट् (कर्मणि)।
नराधिपैः = नराणाम् अधिपाः नराधिपाः, तैः।
अधि + पा + क। माल्यम् इव = माला की तरह।
माला + ष्यञ् (स्वार्थे), माला एव माल्यम्।
शासनम् = शास् + ल्युट्॥ ~~इति॥~~
टिप्पणी- इस पद्य में स्फुटालंकार है॥२॥ इति॥

Scanned with CamScanner